P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

समाचारपत्रों में स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों की महत्ता एवं प्रभाव
(विशेष संदर्भ–दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिंदुस्तान टाइम्स एवं टाइम्स ऑफ़ इंडिया)

शचीन्द्र शेखर शकुन्त
शोधार्थी,
जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग,
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर–प्रदेश

गोविन्द जी पाण्डेय
अध्यक्ष,
जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग,
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर–प्रदेश

सारांश

आज विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी के क्षेत्र में बहुत तेजी के साथ विकास हो रहा है.जीवन का शायद ही कोई ऐसा पहलू बचा हो जिसे विज्ञान ने प्रभावित न किया हो[1]इसी जीवन का प्राथमिक तत्व है स्वास्थ्य. भगवान बुद्ध ने कहा था शरीर को अच्छी तरह स्वस्थ रखना एक दायित्व हैं एक संसाधन है उसके बिना हम अपना मस्तिष्क मजबूत और स्पष्ट नहीं रख पाएंगे। परन्तु जब हम अपने देश में स्वास्थ्य के स्तर पर निगाह डालते हैं तो एक निराशा जनक तस्वीर ही सामने आती है। जबकि आज पूरी दुनियाँ के सभी देश अपने नागरिकों के स्वास्थ्य के प्रति सजग हैं[2]वास्तव में अस्वस्थ शरीर मानव संसाधन के रूप में विकसित नहीं किया जा सकता। राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये यह आवश्यक है कि स्वस्थ बच्चे का जन्म हो, रोगों से उसे सुरक्षा मिले, पोषण सरंक्षण उसे उपलब्ध हो तथा उसके शारीरिक–मानसिक विकास हो। इसलिये कोई भी राष्ट्र विकसित तभी माना जाता है जब वह अपने नागरिकों को स्वास्थ्य सरंक्षण प्रदान करने में सक्षम हो। निसंदेह जीवन शैली, चयन पर निर्भर होती है और चयन, सूचनाओं तथा संपर्क की प्रक्रिया तथा स्वास्थ्य के फल पर निर्भर होता है। संचार माध्यम ये सूचनाएं लोगों तक पहुंचाते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में किसी व्यक्ति के पास क्या विकल्प हैं और वह क्या चयन कर सकता है? वे अपनी इन अर्थपूर्ण सूचनाओं के माध्यम से लोगों की मान्यताओं, सोच, आकांक्षाओं, चयन, व्यवहार और जीवन शैली के संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जनता को जनमाध्यमों की मदद से ही यह जानकारियाँ आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। कई ऐसी बीमारियाँ होती हैं जिनका बचाव अपेक्षित जागरूकता से ही किया जा सकता है। जहाँ मीडिया के योगदान पर बात की जाये तो मीडिया स्वास्थ्य संचार के प्रसार में सूचनात्मक, उत्प्रेरक, सलाहकार आदि कि भूमिकाओं का निर्वहन करतें हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में संचार माध्यमों की भूमिका सदैव से ही अहम रही है। यही कारण है कि भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय में अलग से ही एक सूचना, शिक्षा एवं संचार विभाग कि स्थापना की हुई है। लोगों के स्वास्थ्य की स्थिति राज्य नीति की सफलता के मूल्यांकन का महत्वपूर्ण मानक होती है.जिसमें व्यक्ति का स्वास्थ्य राष्ट्र के स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करता है।

मुख्य शब्द : स्वास्थ्य, संचार, संसाधन, समाचारपत्र, मीडिया, राष्ट्र, प्रभाव।

प्रस्तावना

कोई भी राष्ट्र तभी तरक्की करता है जब उसके नागरिक स्वस्थ होते हैं। बीमारी, महामारी आदि ने सदियों से शहर के शहर उजाड़ दिये हैं। यदि हम इतिहास के पन्ने खंगालें तो स्पष्ट दिखाई देता है कि जितनी मौतें खून की प्यासी तलवारों ने नहीं दी है उसे कई गुना ज्यादा मौतें प्लेग, चेचक, मलेरिया, हैजा, टीवी, शुगर से हुई है जो अब एड्स से हो रही है।[3]अस्वस्थ शरीर मानव संसाधन के रूप में विकसित नहीं किया जा सकता। राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये यह आवश्यक है कि स्वस्थ बच्चे का जन्म हो, रोगों से उसे सुरक्षा मिले, पोषण सरंक्षण उसे उपलब्ध हो तथा उसके शारीरिक–मानसिक विकास में कोई बाधा नहीं हो। इसलिये कोई भी राष्ट्र विकसित तभी माना जाता है जब वह अपने नागरिकों को स्वास्थ्य सरंक्षण प्रदान करने में सक्षम हो। वास्तव में 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है' महात्मा गांधी के इस विचार को समाज विज्ञान और मनोविज्ञान ने महत्वपूर्ण माना है। इसी प्रकार 'तंदुरुस्ती हज़ार नियामत', 'Health is Wealth', 'स्वस्थ रहिए मस्त रहिए' आदि कितने ही वाक्य, मुहावरे, लोकोक्तियां स्वास्थ्य की महत्ता को सपष्ट करते हैं।[4]एक व्यक्ति के लिए, परिवार के लिये, समाज के लिये स्वास्थ्य सबसे महत्वपूर्ण है।

मानवीय क्षमताओं का दोहन व रचनात्मक कार्यों में सक्रियता के लिये स्वास्थ्य बहुत ही आवश्यक है।

स्वास्थ्य संचार पर जनमाध्यमों के प्रभाव के अन्य उदाहरण भी देखने को मिल जाएंगे जैसे– क्या आपने खाने से पहले हाथ धोये है, जल ही जीवन है, बचाव ही सुरक्षा है, टीवी लाइलाज है, ओआरऐस घोल बनायें आदि ऐसे न जाने कितने ही संदेश जनमाध्यमों द्वारा जनता के बीच न केवल स्थापित किये जाते हैं वरन जनता में उनसे मनोनुकूल परिवर्तन भी परिलक्षित होता है।

स्वास्थ्य संचार : एक यथा स्थिति

यक़ीनन स्वास्थ्य एक ऐसी अवधारणा है कि इसे विश्व के साथ–साथ भारतीय संविधान ने भी मानव अधिकार के रूप में मान्यता दी है. स्वास्थ्य के अधिकार को 1946 मे विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा स्थापित किया गया और 1948 मे मानवाधिकार घोषणा पत्र मे भी शामिल किया गया. स्वास्थ्य का अधिकार आज 100 देशों के संविधान मे शामिल हो चुका है। सन 2000 मे संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्वास्थ्य के अधिकार को लेकर कुछ मानक तय किये। यह मानक इसलिये बनाये गये जिससे यह पता चल सके कि जो स्वास्थ्य को लेकर कार्यक्रम चलाये जा रहे है वह गुणवत्तापरक है कि नही। इन मानको को बनाये रखने कि पहली जिम्मेदारी सरकार की है जो अपने देश के नागरिको के स्वास्थ्य की गुणवत्ता बनाये रखने की जिम्मेदारी लेती है।[5] 1948 का मानाधिकार घोषणापत्र का अनुच्छेद 21 सुनिश्चित करता है कि हर एक को ऐसे मापदंड के साथ जीने का अधिकार है जो उसके तथा उसके परिवार स्वास्थ्य और कल्याण के लिए पर्याप्त हों, जिसमें चिकित्सा अवधान तथा जरुरी समाज की सेवाएं एवं बीमारी, अपंगता, वृद्धावस्था आदि से सम्बंधित सुरक्षा का अधिकार शामिल है[6] स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा निदेशक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान के समग्र प्रशासनिक नियंत्रण में 'स्वास्थ्य सूचना केन्द्र' की स्थापना की गई है। इतना ही नहीं भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा भारतीय नागरिकों को स्वास्थ्य संबंधी सूचनाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 'राष्ट्रीय स्वास्थ्य पोर्टल' की स्थापना की गई है। इस पोर्टल द्वारा एक एकल बिन्दु एक्सेस के रूप में नागरिकों, छात्रों, स्वास्थ्य परिचर्या व्यावसायिकों तथा शोधकर्ताओं को प्रमाणिक स्वास्थ्य सूचनाएं उपलब्ध कराई जाती है। प्रतिवेदित अवधि के दौरान स्वास्थ्य सूचना केन्द्र द्वारा मोबाइल अनुप्रयोग विकसित करके कुछ नई पहल जैसे एनएचपी इंद्रधनुष, एनएचपी स्वस्थ्य भारत, प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान, चिंता मुक्ति तथा जनहित के लिए भारत का डेंगू रोग से सामना, लोगों के लाभ हेतु प्रारंभ की गई है। इस पोर्टल द्वारा छह भाषाओं जैसे हिन्दी, गुजराती, बांग्ला, तमिल, पंजाबी तथा अग्रेंजी में सूचनाएं प्रसारित की जाती है। यह पोर्टल फेसबुक, ट्विटर जैसी सामाजिक साइट पर भी उपलब्ध है।[7]

भारत में जनस्वास्थ्य की अवधारणा और स्थिति उतनी अच्छी नहीं जितना इसे समझा जाता है 68 वर्ष पूर्व सर जोसेफ भोरे समिति की सिफ़ारिशें याद आतीं हैं जो आज भी पूरी तरह लागू नहीं हो पायी है। भोरे समिति की तीन महत्त्वपूर्ण अनुशंसाओं को हमेशा याद किया जाता है। उनकी पहली अनुशंसा थी कि भुगतान का सामर्थ्य नहीं होने पर भी कोई नागरिक स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित न हो। दूसरा रोग निवारण तथा रोग निरोधक का कार्य एक संस्था द्वार परिचालित किया जाये। तीसरा यह कि जनस्वास्थ्य शासन की ज़िम्मेदारी है। दुखद यह है की स्वतन्त्रता प्राप्ति के 71 वर्षो के बाद भी इस पर पूरी तरह से अमल नहीं किया गया।जबकि अधिकांश सभ्यताओं में स्वास्थ्य का महत्त्व समान है। वास्तव में हर समाज में स्वास्थ्य के विषय में उनकी अपनी विशेष धारणा है। आमतौर पर स्वास्थ्य को बीमारी का न होना मानते हैं। व्यकितगत तौर पर यह नहीं कहा जा सकता कि स्वास्थ्य का महत्त्व सबसे अधिक है क्योंकि अक्सर इसका महत्त्व आवश्यकतानुसार बदलता रहता है। व्यकितगत तौर पर अक्सर दूसरी आवश्यकताएं जैसे कि धन, बल, विद्या, सुरक्षा एवं प्रतिष्ठा इत्यादि स्वास्थ्य के महत्त्व को कम महत्त्व देती है और स्वास्थ्य को निश्चित मानकर हम उसकी ओर विशेष ध्यान तब तक नहीं देते जब तक कि उसे खो न दे।[8]वास्तव में स्वास्थ्य किसी भी व्यक्ति का प्रथम एवं अनिवार्य संसाधन है जो कि "मानव संसाधन" शब्द अंग्रेजी के "Human Resource" शब्द का अनुवाद है. रिसोर्स शब्द के अर्थ हैं – वांछित के साधन की आपूर्ति, उपभोग संचय, स्वास्थ्यपूरक, उपकरण, समय बिताने मनोरंजन के साधन[9] यह सच है कि भारत की पारंपरिक और बेहद महत्त्वपूर्ण आरोग्य प्रणाली आयुर्वेद, सिद्धा, प्राकर्तिक चिकित्सा एवं योग की समृद्ध विरासत होने के बावजूद आज इनकी स्थिति अपने देश में भी अच्छी नहीं है। आज दुनिया के तमाम विकसित देश अपने नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने के लिए स्वास्थ्य संचार के अंतर्गत कई कार्यक्रम और विज्ञापन प्रसारित करते है। जन स्वास्थ्य संचार विशेषज्ञ अच्छी तरह जानते हैं कि प्रभावी संचार में लोगों की धारणाओं, विश्वास एवं आदतों को बदलने की ताकत होती है । आजादी के बाद से ही भारत में स्वास्थ्य संचार की प्रक्रिया जारी है, अखबार, रेडियो, टीवी, नुक्कड़ नाटक, पत्र– पत्रिकाओं, विज्ञापन आदि के माध्यम से साक्षरता को बढाने की कोशिश की गयी है जानकार मानते है की भारत में हेल्थ कम्युनिकेशन की स्वास्थ्य सुधार में अहम् भूमिका रही है। भारत से पोलियो के उन्मूलन की सफलता हासिल करने में हेल्थ कम्युनिकेशन का प्रयास प्रशंसनीय रहा है स्वास्थ्य संचार ने सार्वजनिक स्वास्थ्य के सुधार में देश के लोगों के जीवन को ख़ासा प्रभावित किया है। आज सरकार अपनी तरफ से स्वास्थ्य संचार को मजबूत बनाने की कोशिश कर रही है और इस डिजिटल युग में मोबाइल संदेशों, ब्लॉग्स, सोशल नैटवर्किंग वैबसाइट्स आदि नवीनतम विधियों से लोगों तक स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी दी जा रही है[10] योजना आयोग अब नीति आयोग के आंकड़ों के अनुसार केवल 1-4 प्रतिशत खर्च केंद्र औए राज्य सरकारें वहाँ करती हैं, शेष 4-7 प्रतिशत का बोझ जनता पर डाल दिया जाता है। 2018-2019 के बजट प्रस्ताव में तो सरकार ने स्वास्थ्य के लिये 56226 करोड़

रूपये का ही प्रावधान रखा है,जबकि वर्ष 2017 में राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति में इसका संकेत दिया गया था कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में खर्च को बढ़ाकर जीडीपी का 2.5 फीसदी किया जाएगा लेकिन यह अब भी इससे आधा है.

शोध का उद्देश्य

शोध को प्रगतिशील बनाने हेतु उद्देश्य महत्वपूर्ण घटक है। प्रस्तुत शोधपत्र के भी अपने प्रतिबद्धित उद्देश्य हैं जो कि निम्नलिखित हैं –

1. समाचारपत्रों का स्वास्थ्य सम्बंधित द्रष्टिकोण जानना
2. स्वास्थ्य समाचारों की महत्ता को रेखांकित करना
3. जन सामान्य में व्याप्त स्वास्थ्य समस्याओ पर समाचारपत्रों की भूमिका जानना
4. लोगों पर स्वास्थ्य समाचार के प्रभाव को जांचना
5. समाचारपत्र द्वारा जन कल्याणकारी स्वास्थ्य योजनाओ की जानकारी के बारे में पता लगाना
6. सरकार की प्रिंट मीडिया के माध्यम से स्वास्थ्य के प्रति लोगों की जागरूकता का पता लगाना।

प्रयुक्त शोध प्रविधि एवं सीमाएं

प्रस्तुत शोधपत्र में मुख्य रूप से अंतर्वस्तु विश्लेषण, तुलनात्मक एवं निदर्शन प्रविधि का प्रयोग किया गया है। जिसमे प्रश्नावली, साक्षात्कार आदि के माध्यम से शोध के तथ्यात्मक आंकड़ों को निकाला गया है जिसके आधार पर ही निष्कर्ष पर पहुंचा गया है। जहां तक बात कि जाए शोध समय सीमा की तो हमने शोध की समय सीमा 1 जनवरी 2017 से 15 जनवरी 2017 तक के प्रकाशित अंकों को ही इसमें शामिल किया है। जबकि शोध की अन्य सीमाएं निम्नलिखित हैं

1. प्रस्तुत शोधपत्र में हमने केवल लखनऊ से प्रकाशित होने वाले अंकों को ही शामिल किया है साथ ही केवल लखनऊ जिले को ही शामिल किया गया है।
2. प्रश्नवाली निदर्शन के मामले में 100 प्रश्नावलियों का अध्ययन किया गया है जिसमें स्त्री एवं पुरुषों को क्रमश : 50-50 की तादाद में लिया गया है।
3. प्रश्नावली भरवाने में 10 डॉक्टर, 10 शिक्षक, 20 घरेलू लोग, 10 दुकानदार, 30 विद्यार्थी, 10शोधार्थी, 10 ग्रामीण लोगों को शामिल किया गया है।

पाठक वर्ग पर प्रभाव : अध्ययन एवं प्रतिक्रिया विश्लेषण

हमने अपने शोध के अति आवश्यक तत्व पाठक वर्ग पर पड़ने वाले प्रभाव का प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से अध्ययन किया जिसमें प्रश्नावली के माध्यम से कुल 100 लोगों से जबाव हासिल किए गए । इन सभी उत्तरदाताओं से प्राप्त उत्तरों का हमने गहन अध्ययन किया एवं जिसके आधार पर प्रश्नावली के आंकड़ों को निम्न प्रकार से रेखांकित किया जा सकता है –

प्रश्न संख्या	प्रश्न	उत्तर
1	क्या आप मानते है कि स्वास्थ्य समाचार स्वस्थ्य जीवन के लिये आवश्यक हैं ?	हाँ –91 नहीं –1 कुछ–कुछ –8
2	आप समाचारपत्रों में किस प्रकार की खबरों को महत्व देते हैं ?	राजनैतिक संबंधी –72 मनोरंजन संबंधी –8 खेल संबंधी –4 स्वास्थ्य संबंधी –16 अन्य –0
3	क्या आप मानते हैं समाचारपत्रों में स्वास्थ्य संबंधी समाचार होना आवश्यक है ?	हाँ –97 नहीं –0 कह नहीं सकते –3
4	क्या आप जानते हैं कि सरकार समाचारपत्रों के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जानकारी प्रदान करती है ?	हाँ –63 नहीं –9 कह नहीं सकते –28
5	आप सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं के बारे में जानकारी कैसे प्राप्त करतें हैं ?	प्रिंट मीडिया से –30 इलेक्ट्रोनिक मीडिया(टीवी/रेडियो) से –68 बैनर/होर्डिंग से –0 अन्य से –2
6	क्या आप सरकार की स्वास्थ्य योजनाओं के लिये जनमाध्यमों जैसे समाचारपत्रों आदि को प्रभावी मानते है ?	हाँ –56 नहीं –40 कह नहीं सकते –4
7	आप कौन–कौन से समाचारपत्रों का अध्ययन करतें है ?	दैनिक जागरण-37 टाइम्स ऑफ़ इंडिया –6 हिंदुस्तान टाइम्स –9 अमर उजाला –30 अन्य –18

8	आपके अनुसार स्वास्थ्य संबंधी समाचारों को समाचारपत्रों में किस स्थान पर होना चाहिये ?	विशेषांक –19 सम्पूर्ण पृष्ठ –8 अंतिम पृष्ठ –15 नियमित कॉलम –58
9	क्या स्वास्थ्य संबंधी समाचारों से आपकी जीवन शैली प्रभावित होती है ?	हाँ –38 नहीं –5 कह नहीं सकते –8 कुछ–कुछ –49
10	आप अपने स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का उपाय/निदान समाचारपत्रों में तलाशतें हैं ?	हाँ –22 नहीं –28 कभी–कभी–50
11	क्या आप मानते है कि स्वास्थ्य संबंधी समाचारों से समाचारपत्र स्वास्थ्य व्यवसाय के निर्माण में सहायता करतें हैं ?	सहमत हैं –15 असहमत हैं –13 पता नहीं –64 कह नहीं सकते –8
12	स्वास्थ्य समाचारों से जनता में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ रही है ?	हाँ –38 नहीं –3 पता नहीं /कह नहीं सकते –59
13	क्या मीडिया और सरकार वास्तविक रूप से स्वास्थ्य संचार के प्रति गंभीर है ?	हाँ –27 नहीं –15 कह नहीं सकते –58
14	आप पत्रों में स्वास्थ्य संबंधी समाचारों के किस रूप से अधिक प्रभावित होते हैं ?	फीचर/आलेख के रूप में –55 विज्ञापन के रूप में –12 सामान्य समाचार के रूप में–33 अन्य रूप में –0
15	स्वास्थ्य संबंधी संचार में आप किसे प्राथमिकता देते हैं ?	योग/व्यायाम के बारे में–18 दवाओं के बारें में –41 अस्पताल के बारे में –13 हैल्थ विशेषज्ञों की सलाह के बारे में –28
16	समाचारपत्रों में स्वास्थ्य संचार की भाषा कैसी होनी चाहिये ?	सरल/आम बोलचाल की भाषा –92 सारगर्भित भाषा –0 व्याख्यात्मक भाषा –1 वैज्ञानिक/चिकित्सकीय भाषा –7
17	आप समाचारपत्रों में हैल्थ विशेषज्ञ या हैल्थ पत्रकार को आवश्यक मानतें हैं ?	सहमत –76 असहमत –5 कह नहीं सकते –19 कोई प्रतिक्रिया –0
18	क्या आप स्वास्थ्य समाचारों में घरेलू नुस्खे या प्राथमिक उपचार को प्राथमिकता देते हैं ?	हाँ –88 नहीं –0 कह नहीं सकते –12
19	तुलनात्मक रूप से स्वास्थ्य के मुद्दों को प्रमुखता से लिया जाता है ?	हिन्दी माध्यमों के समाचारपत्रों में –59 अँग्रेजी माध्यमों के समाचारपत्रों में –34 अन्य–7
20	समाचारपत्रों में आप स्वास्थ्य संबंधी खबरें पाते हैं ?	वेबसाइड विज्ञापन –0 स्वास्थ्य संबंधी रिपोर्ट –47 सरकारी विज्ञापन/सूचना –22 अन्य –31

निष्कर्ष

मुद्रित जनमाध्यमों में स्वास्थ्य संचार पर केन्द्रित उपयुक्त शोध से प्राप्त हुए परिणामों को निम्नलिखित तरीके से व्यक्त कर सकतें हैं–

1. पाठकों ने माना कि समाचारपत्र स्वास्थ्य के बारे में जानकारी तो दे रहे हैं साथ ही स्वास्थ्य समाचारों से अधिक स्वास्थ्य संबधित विज्ञापनों की भारी तादाद से समाचारपत्र स्वास्थ्य व्यवसाय के निर्माण में सहायता प्रदान कर रहे हैं।

2. लोगों ने माना कि समाचारपत्र उनके खान–पान, जीवनशैली को स्वास्थ्य कि दृष्टि से अभी इतना प्रभावित नहीं कर रहे जितना राजनैतिक और मनोरंजन समाचार करते हैं। लोगों से प्राप्त उत्तरों के अनुसार लोग सबसे पहले राजनैतिक फिर मनोरंजन उसके बाद ही स्वास्थ्य से संबन्धित खबरों को महत्त्व देते हैं।
3. समाचारपत्रों में स्वास्थ्य से संबन्धित दृष्टिकोण को हम इस प्रकार जान सकते है कि समाचार पत्र नियमित अंतराल पर स्वास्थ्य से संबन्धित समाचारों को रिजर्व रखता है जिससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि समाचारपत्र स्वास्थ्य की खबरों को तवज्जो दे रहा है। ठीक इसी प्रकार दैनिक जागरण सप्ताह के एक दिन विशेषांक के रूप में स्वास्थ्य से संबन्धित समाचारों को प्रकाशित करता है।
4. लखनऊ जिले में स्वास्थ्य संचार स्थिति की बात की जाए तो यहाँ के सरकारी चिकित्सा अधिकारी लखनऊ को अच्छी स्थिति में मानते हैं जिसकी पुष्टि स्वयं यहाँ के निवासी तथा समाचारपत्र– करते हैं।
5. चयनित समाचारपत्र के शोधपरक स्वास्थ्य संचार पर नज़र डालें तो हिन्दुतान टाइम्स ने शोधपरक समाचारों को प्रमुखता से प्रकाशित किया है हालांकि हिन्दुतान टाइम्स को पढ़ने वाला एक विशेष पाठकवर्ग है जो तथ्यपूर्ण एवं विश्लेषणात्मक समाचारों को ही महत्त्व देता है जबकि दैनिक जागरणमें इसका अभाव पाया गया। वहीं दूसरी ओर अमर उजाला व् टाइम्स ऑफ़ इंडिया में भी इस तथ्य की कमी पायी गयी।

सुझाव

स्वास्थ्य के प्रति समाचारपत्र का अपना–अपना दृष्टिकोण होता हैं. लखनऊ के लोगों के द्वारा दिये गए उत्तर, विभिन्न समाचारपत्रों का स्वास्थ्य के प्रति रवैया, सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन आदि इन सभी का अध्ययन करने के बाद तमाम पहलू ऐसे हैं जिन्हें हम सुझाव के रूप में निम्नाकिंत कर सकते हैं –

1. समाचारपत्रों का स्वास्थ्य समाचारों से ज्यादा स्वास्थ्य विज्ञापनों को प्रकाशित करना उचित नहीं लगता अतः समाचारपत्र–पत्रिकाओं को चाहिए कि वह स्वास्थ्य समाचारों का और अधिकाधिक मात्रा में प्रकाशन करें।
2. दैनिक जागरण को और अधिक वैज्ञानिक तरीके से स्वास्थ्य आलेख प्रकाशित करने चाहिए क्योंकि लोगों का विश्वास इन्ही आलेखों पर ज्यादा होता है।
3. लोगों को भी अपनी इस भागमभाग भरी दिनचर्या में स्वास्थ्य से संबन्धित खबरों को प्राथमिकता देनी चाहिए क्योंकि स्वास्थ्य संबन्धित खबरों से छोटी–छोटी दैनिक परेशानियों से बचा जा सकता है।
4. समाचारपत्र को नियमित रूप से एक या आधा पेज स्वास्थ्य की समस्याओं के निदान के लिये आरक्षित रखना चाहिए।
5. समाचारपत्रों को सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं के बारे में और अधिक गहन तरीके से प्रस्तुत किया जाए ताकि लोग सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं के बारे में अधिक से अधिक जानकारी लाभान्वित हो सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *विस्तार इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी कम्युनिकेशन– ए रिपोर्ट, प्रकाशक–सी एस आई आर गोल्डन जुबली कांफ्रेंस, पृष्ठ सं.3*
2. *झा कुमार, राजेश, सं. (फरबरी 2014) : योजना, प्रकाशक : प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नयी दिल्ली*
3. *पृष्ठ सं. 206, भानावत, संजीव, सं. (2008) : पत्रकारिता एवं विकास संचार, प्रकाशक – राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर , राजस्थान*
4. *पृष्ठ सं. 206, भानावत, संजीव, सं. (2008) : पत्रकारिता एवं विकास संचार, प्रकाशक – राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर , राजस्थान*
6. *http://www.deshbandhu.co.in/vichar/स्वास्थ्य–का–अधिकार–क्या–है -25761-2*
7. *http://adhikarexpress.com/lokseva-adhikar/swasthata-pramanpatra-ka-adhikar/506-swasthya-ka-adhikar-maulik-adhikar.html*
7. *पृष्ठ संख्या 04, सं. (2016–17): समीक्षा विवरण रिपोर्ट, प्रकाशक– राष्ट्रीय स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण सस्थान, नयी दिल्ली*
8. *http://hi.vikaspedia.in/health/nutrition/92a94b937915-92492494d92494d93594b902-91593e-91c94d91e93e928/93892e93e91c-92e947902-93894d93593e93894d92594d92f-90f935902-92a94b937923-915940-92793e93092393e*
8. *पाण्डेय, शशिकला (2007) : समाज शिक्षा और विकास, प्रकाशक : अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 52, तुकारामबाग, इलाहाबाद*
9. *http://pallavimishra34.blogspot.com/search/label/आई–नेक्स्ट*